तीसरा मोर्चा और ध्रुवीकरण

भारतीय राजनीति का अंधायुग

मनोज कुमार झा

पिछले दिनों मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव प्रकाश करात ने तीसरा मोर्चा के गठन के संबंध में निराशाजनकम टिप्पणी की। उनका कहना था कि आज के राजनीतिक हालात में तीसरे मोर्चे के गठन में कई व्यावहारिक समस्याएं हैं। तीसरे मोर्चे के गठन के साथ ही मुख्य सवाल नेतृत्व का खड़ा हो जाता है। वामपंथियों ने सदा से चाहा कि इस मोर्चे के नेतृत्व का मौका उन्हें मिले, ताकि अगर इसकी सरकार बनती हो तो प्रधानमंत्री उनका कोई नेता बने। एक बार ये मौका दिवंगत कामरेड ज्योति बसु को अनायास मिलने जा रहा था, पर उस समय तथाकथित हार्डलाइनर प्रकाश करात और उनके साथियों ने उनकी राह में रोड़े खड़े कर दिए। फलस्वरूप, देश को जो पहला 'वामपंथी' प्रधानमंत्री मिलने जा रहा था, उससे वह वंचित हो गया। कामरेड ज्योति बसु को इसका मलाल जीवन भर रहा।

बहरहाल, इस देश के पूंजीपति ज्योति बसु के प्रधानमंत्री बनाये जाने के जरा भी खिलाफ नहीं थे, क्योंकि ज्योति बसु पूंजीवादी नीतियों-बाज़ारवादी अर्थव्यवस्था के घोर समर्थक थे और पार्टी संगठन को गुंडातंत्र में बदल कर उन्होंने तीन दशकों तक पश्चिम बंगाल पर राज किया। उनके उत्तराधिकारी बुद्धदेव भट्टाचार्य तो कॉरपोरेट के समर्थन में उनसे भी चार बांस आगे थे। पूंजीपतियों के वे भी बहुत प्यारे थे। इस देश में स्टालिनवादी वामपंथियों ने शुरूआत से ही कांग्रेसी शासन को मजबूत करने का काम किया। पूंजीवाद की इन्होंने खूब सेवा की, लेकिन पूंजीपतियों ने पश्चिम बंगाल के विकास में रूचि नहीं ली। पिछड़ा का पिछड़ा ही रह गया बंगाल।

जब तक वामपंथियों ने काग्रेस का समर्थन किया, उन्हें सत्ता की मलाई खुब चाट ने को मिली। सत्ता के गलियारों में खूब मौज-मस्ती करते रहे वामपंथी, पर प्रकाश करात की महत्तवाकांक्षा ज़्यादा ही कुलांचें भरने लगी। सरकार को संकट में देख उन्हें लगा कि वे किंगमेकर हो सकते हैं और आड़े वक्त पर सरकार से समर्थन वापस ले लिया। पर रिश्वत देकर सांसदों का समर्थन जुटाने में माहिर कांग्रेस ने वही पुराना दाव आजमाया, सरकार बच गई और पश्चिम बंगाल हाथ से निकल जाने के बाद ये राजनीति के अरण्य में भटकने लगे। अब इन्हें कोई पूछने वाला नहीं। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में ये पूरी तरह अप्रासंगिक हो चुके हैं। इनका जनाधार पूरी तरह से ढह चुका है। फिर भी ये जिंदा हैं और मौज-मस्ती की जिंदगी बसर कर रहे हैं तो ट्रेड यूनियनों से होने वाली बेशुमार कमाई पे। दशकों तक सत्ता में बने रहने के कारण दौलत भी अच्छी-खासी जुटाली और पार्टी मेंम्बरों से लेवी भी वसूलते हैं। जिंदगी आराम से कट रही एयरकंडीशंड बहुमंजिला ऑफिस में। कड़ी धूप में हड्डी जलाकर किसी तरह दो रोटी कमाने वाले मज़दूरों-किसानों का दुख-दर्द ये क्या जाने अंग्रेजीदां कम्युनिस्ट लीडराना।

भारतीय वामपंथ ने कभी कोई मौलिक चिंतन नहीं किया। कोई नई राह नहीं बनाई। बस लकीर पीटते रहे। नेहरू से लेकर इंदिरा और राजीव से लेकर सोनिया का समर्थन करने में ये कभी पीछे नहीं रहे। सत्ता मिलने पर ये चाउशेस्कु हो सकते थे, पर इतने बड़े देश में, बहु-सांस्कृतिक, बहु-स्तरीय संरचना वाले समाज में इनकी दाल कभी गल नहीं बन पाई। बस सरमायापरस्त शासकों के दुमछल्ल बने रहे। यद्यपि मेहनतकश जनता कम्युनिस्ट विचारधारा के प्रति काफी आकर्षित हुई और कई बार कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा किए जाने वाले आंदोलनों में मज़दूरों-किसानों ने जमकर भाग भी लिया, पर उन्हें हासिल कुछ भी नहीं हो पाया।अब तो मेहनतकश जनता का वामपंथी दलों एवं नेताओं से पूरी तरह मोहभंग हो गया है। तीन दशक से भी ज़्यादा समय तक पश्चिम बंगाल पर एकछत्र राज करने वाले वाममोर्चा की मिट्टी पलीद हो चुकी है। केरल के माकपाई नेताओं पर भ्रष्टाचार के कई आरोप लग चुके हैं। दूसरे राजनीतिक दलों की तरह, माकपा में भी गुटबाजी का बोल वाला है। अधिकांश नेता अभिजातवर्गीय और जन-जीवन से पूरी तरह कटे हुए हैं। अब चुनावी राजनीति में इनका फिर से उभर कर आ पाना नामुमकिन-सा लगता है।

न कांग्रेस और न ही भाजपा अपने दम पर सरकार बनाने की बात स्वप्न में भी सोच सकती है। सरकार बनाने के लिये इन्हें क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन करना निहायत ही जरुरी है। क्षत्रपों के बिना सोनिया हों या मोदी, श्रीविहीन हैं स्पष्ट है, भारतीय राजनीति में क्षत्रप मुख्य ताकत बनकर उभर चुके हैं। समझा जा सकता है कि भारतीय राजनीति संकट के कैसे भंवर में फंस चुकी है। इस संकट से निकल पाना मुमकिन नहीं। यह संकट लगातार बढ़ता ही जायेगा। विकल्प की शक्तियां कहीं भी दिखाई नहीं पड़तीं।

संभवत: प्रकाश करात को इसका अहसास हो गया है। इसीलिए, वह तीसरा मोर्चा के गठन के प्रति कोई उत्साह नहीं दिखा रहे हैं। दूसरी तरफ, समाजवादी पार्टी प्रमुख मुलायम सिंह यादव तीसरा मोर्चा के गठन के प्रति काफी आशान्वित हैं। पहले भी उन्होंने यह उपक्रम किया था, प्रकाया करात भी उनके साथ थे, पर यह प्रयास सफल नहीं हो पाया। सभी हारे हुए खिलाड़ी एकजुट हुए थे। ओमप्रकाश चौटाला से लेकर चंद्रबाबू नायडू और जयललिता तक। पर बात नहीं बनी।

लेकिन अगले साल जो राजनीतिक संकट गहराने वाला है, राजनीतिक अस्थिरता का जो आलम बनने वाला है, उसे देखते हुए मुलायम सिंह की प्रधानमंत्री बनने की चिर संचित अभिलाषा फिर कुलाचें भरने लगी है और तीसरा मोर्चा बनाने के लिये वे फिर से सक्रिय हो गए हैं। वामपंथियों को साथ लिये बिना तीसरा मोर्चा बन नहीं सकता। लेकिन वामपंथि इसके प्रति उत्सुक नज़र नहीं आ रहे।

सोनिया-मनमोहन राज में कांग्रेस एक महापतित भ्रष्ट पार्टी के रूप में उभरी है। भाजपा की हालत भी अच्छी नहीं है। स्वयं लालकृष्ण आडवाणी ने कहा है कि भाजपा जनता की उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी। भाजपा में प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी को लेकर सिर-फुटौव्वल की हालत बनने जा रही है। पार्टी के अंदर अगर मोदी रूपी रावण है तो विभीषण भी कई हैं और यह एक ऐसी पार्टी है जो राममंदिर के मुद्दे को भड़का कर, देश भर में दंगों की आग लगा कर सत्ता में आई थी। फिर भी, कांग्रेसी के बरक्स यह एक मात्र राष्ट्रीय पार्टी है। बाकी सभी अन्य दल क्षेत्रीय हैं। उनका अखिल भारतीय सवरूप नहीं है।

साथ ही, न कांग्रेस और न ही भाजपा अपने दम पर सरकार बनाने की बात स्वप्न में भी सोच सकती है। सरकार बनाने के लिये इन्हें क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन करना निहायत ही जरूरी है। क्षत्रपों के बिना सोनिया हों या मोदी, श्रीविहीन हैं स्पष्ट है, भारतीय राजनीति में क्षत्रप मुख्य ताकत बनकर उभर चुके हैं। समझा जा सकता है कि भारतीय राजनीति संकट के कैसे भंवर में फंस चुकी है। इस संकट से निकल पाना मुमकिन नहीं। यह संकट लगातार बढ़ता ही जायेगा। विकल्प की शक्तियां कहीं भी दिखाई नहीं पड़तीं।

'जनता के पास एक ही चारा है बगावत'

जनता बगावत करे भी तो कैसे?

-मनोज कुमार झा

इस बात में कोई संदेह नहीं कि सोनिया-मनमोहन की यूपीए सरकार स्वतंत्र भारत की सबसे भ्रष्ट और निकृष्ट सरकार साबित हुई। यह एक ऐसी सरकार है कि इसका नियंत्रण खुद अपने-आप पर भी नहीं हैं। लिहाजा, यह तथाकथित जनतंत्र को चलाने वाली एक अजीबो-गरीब ही सरकार है, जिसकी भद पूरी तरह बुरी तरह से पिट चुकी है। इस सरकार में देश के चुनिंदा लुटेरे बैठे हुए हैं, जो भेड़ियों की तरह हैं और जिनके पैने दांत जनता के खून से रंगे हुए हैं। इस सरकार ने जितने घोटाले किये हैं, वे इतिहास में दर्ज किये जाएंगे और जनता इन लुटेरे बेशर्म शासकों पर थूकेगी, पर यह तो इतिहास जो भविष्य है, उसकी बात है। फिलहाल तो हालत बद से बदतर ही होती जाती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस देश में अभी कोई ऐसी पॉलिटिकलपार्टी नहीं, कोई ऐसा लीडर नहीं, जो जनता एवं जनतंत्र के हक में खड़ा होने वाला हो। खूंखार भेड़िए हैं तो रंगे सियार भी जो रामनामी दुशाला लिए चलते हैं। कोई हिंदूवाद का ध्वजा फहरा रहा है, मुसलमानों के खिलाफ़ ज़हर उगल रहा है, फिर भी वोट लेने के लिये सेकुलरिज़्म का लवादा ओढ़ कर उन्हें लुभाने की कोशिश करता है। हज़ारों-हज़ार मुसलमानों के कत्लेआम का सीधा जिम्मेवार व्यक्ति पूरे देश में घूम-घूम कर अगला प्रधानमंत्री बनने का दावा ठोक रहा है। वह हिंदूवाद की बात नहीं करता। वह विकास की बात करता है। पर जिस 'विकसित' गुजरात का वह तीसरी बार मुख्यमंत्री बना है, उस राज्य में किसान बेहाल हैं और 30-30 हज़ार रुपये में औरतें बिक रही हैं। टाटा, बिड़ला, अंबानी और मित्तल जैसे पूंजीपति बार-बार उससे मिलकर कह रहे है कि आप तो प्रधानमंत्री बनो, फिर हम पूरा का पूरा देश जल्दी से जल्दी बेच देंगे। यह बाजारवादी व्यवस्था है। यहां सामान से लेकर इंसान तक बिक सकता है तो देश क्यों नहीं बिक सकता। बिक रहा है। लगातार बिकता चला जा रहा है।

सरकार बिकी हुई है। अदालतें भी। जांच-एजेंसियों की क्या औकात। पोल-पट्टी ऐसी खुली जिसने सरकार को और भी ज़्यादा बेशर्म और ढीठ बना दिया। अब तक के बडे और देश को हिला कर रख देने वाले घोटालों में एक कोयला घोटाला के मुख्य आरोपी प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कोयला घोटाला जांच प्रकरण में सीबीआई की रिपोर्ट में फेरबदल करवाने वाले कानून मंत्री अश्विनी कुमार को आखिरी दम तक बचाने की कोशिश की। इस्तीफा लेने का नाटक नहीं किया। लेकिन जब रेलमंत्री पवन बंसल रिश्वतखोरी कांड में फंस गए तो सोनिया की समझ में आ गया कि अब इन दोनों से इस्तीफा नहीं लिया गया तो सरकार चला पाना मुश्किल होगा।

मजबूरन इस्तीफा लिया। अब जो नये कानून मंत्री बने हैं। कपिल सिब्बल, ये बड़े मियां है। जब छोटे मियां ही सुभान अल्लाह थे तो इन बड़े मियां का तो कहना ही क्या! इनके कारनामें भी कम नहीं।

बावजूद इसके, संसद में नेता रूपी सियार हुआ-हुआ का शोर नहीं मचाते, पर इसी बीच ये पिद्दी-सा आईपीएल क्रिकेट मेंट में स्पॉट फिक्सिंग का मामला सामने आ गया तो मीडिया ने ताजा बिकाऊ माल देखकर अपना सारा फोकस इसी पर कर दिया। इस देश में सोनिया-मनमोहन सरकार ने घोटालों का जो वर्ल्ड रिकार्ड बनाया है, उसे देखते हुए ये आईपीएल स्पॉट फिक्सिंग क्या है! क्रिकेट में तो मैच फिक्सिंग का इतिहास रहा है। मनोज प्रभाकर से लेकर कपिलदेव, अजहरूद्दीन और कई विदेशी क्रिकेटर इसमें फंस चुके हैं। फिल्मी सितारे भी क्रिकेट से पैसा कमा रहे हैं और राजनीति बाजों ने क्या कुछ कम कमाया। घोटाला किंग शरद पवार जब बीसीसीआईका चीफ़ था तो उसने अंधेरगर्दी ही मचा रखी थी।

बहरहाल, अगले साल सोनिया-मनमोहन सरकार का जाना तय है, पर आएगाा कौन? हत्यारा मोदी खुद ही अभी से ही अपने-आपको प्रधानमंत्री मान कर चल रहा है, पर बीजेपी के भीतर ही कई बड़े नेता इस बात के खिलाफ हैं कि उसे प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया जाए। लाल कृष्ण आडवाणी स्वयं कह चुके हैं कि भाजपा जनता की आशाओं पर खरी नहीं उतरी और पार्टी सत्ता में नहीं आ सकती। बीजेपी के पास भ्रष्टाचारियों की क्या कोई कमी है! गडकरी को भ्रष्टाचार के कारण ही पार्टी अध्यक्ष पद छोड़ना पड़ा था। कई नेता कैमरे के सामने रिश्वत लेते पकड़े जा चुके हैं तो कई सेक्स स्कैंडल में फंस कर बदनाम हो चुके हैं। पार्टी के पास अब कोई हिंदूवादी मुद्दा भी नहीं रहा। राममंदिर की हकीकत जनता समझ चुकी है।

बिहार में लालू के माफ़िया साथियों को अपने साथ जोड़ नीतीश कुमार ने अंधेरगर्दी मचा रखी है तो बंगाल में ममता के तेवर हिटलराना हैं। यूपी में मुलायम पुत्र अखिलेश ने महागुंडाराज चला रखा है और मुलायम प्रधानमंत्री बनने का ख़्वाब देख रहे हैं, पर सोनिया से डरते भी हैं कि कहीं वह उन पर सीबीआई न छोड़ दे। दलितों की 'देवी' मायावती को भी अपने पीछे सीबीआई छोड़े जाने का डर है। तो क्या यह मान लिया जाये कि सोनिया-मनमोहन की सरकार सीबीआई की वजह से हीं बची हुई है। सीबीआई की पोल तो स्वयं सीबीआई निदेशक रंजीत सिन्हा ने ही खोल कर रख दी। बची-खुची कसर सीबीआई के दो अफसरों के रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ़्तार होने से पूरी हो गई। दूसरे अफसरों की तरह सीबीआईके अफसर भी घूसखोर हैं, तो जनता समझ सकती है इनकी जांच की हकीकत।

अपनी सरकार के चार साल पूरे होने के बाद अपनी उपलब्धियों का ढिंढोरा पीटने के लिये सोनिया-मनमोहन ने रिपोर्ट कार्ड पेश किया। इसे पेश करते बक़्त उनके चेहरों पर नकली मुस्कान तक नहीं थी।

सोनिया-मनमोहन सरकार की उपलब्धियों का हाल पूरे देश को मालूम है। घोटालों में पिछली सभी सरकारों से अव्वल रहना एकमात्र उपलब्धि है। सरकार हर मोर्चे पर फेल है। अर्थव्यवस्था गर्त में है। लूट का माल दैत्याकार मल्टीनेशनल कंपनियों के पास जा रहा है औ सरकार कमीशन खा रही है।

क्या यह सरकार दुबारा सत्ता में लौट पायेगी?

कांग्रेस नेतृत्वविहीन है। राहुल 'पप्पू' के 'पप्पू' ही बने रह गए। लगता है किसी दूसरे ग्रह के प्राणी हैं। कांग्रेस के पास पीएम पद का कोई पूर्व घोषित उम्मीदवार नहीं। यूपीए को टूट-बिखर जाना है।

भाजपा नेतृत्व को खुद पर ही भरोसा नहीं। बस क्षत्रप ताल ठोक रहे हैं, जो बड़े-बड़े माफ़िया सरदारों, गुंडों, बलात्कारियो, हत्यरों, दंगाइयों को संरक्षण दे रहे हैं और उनसे ताकत हासिल कर रहे हैं।

बिहार में तस्लीमुद्दीन और नीतीश कुमार के खास गैंगस्टर्स, यूपी में मुलायम-अखिलेश की महागुंडा ब्रिगेड, कुंडा का गुंडा रघुराज प्रताप सिंह, हरियाणा में हुड्डा का कांडा और न जाने कितने लफंगे। पुलिस सरकार की गुंडा शक्ति का विधि सम्मत संगठित तंत्र है। 'बंगाल की शेरनी' ममता दी दी ने भी गुंडा ब्रिगेड आखिर बना ही ली। फिर बाकी क्या बचा? वामपंथी समझ चुके हैं कि अभी के हालात में वे कुछ कर नहीं सकते। इसीलिये एयरकंडीशंड ऐशगाहों में आराम फर्मा रहे है, पर है इतने अवसरवादी मौका मिलते ही मैदान में कूद पड़ेंगे। दशकों तक इन्होंने भी सरकार चलाई है और हर दाव-पेंच में माहिर हैं। गुंडागीरी में ये किसी से भी कम नहीं।

'राजनीति नंगी वेश्या है...'

-केदारनाथ अग्रवाल

यह खुलेआम पब्लिक के बीच नाचेगी। इस तमाशे को कोई रोक नहीं सकता। इस अश्लील तमाशे को।

तो जनता क्या करे?

अदम गोंडवी साहब कहते हैं-

जनता के पास एक ही चारा है बगावत
ये बात कह रहा हूं होशो हवास में।
पर सवाल ये है, जनता बगावत करे भी तो कैसे
ये सवाल अभी भविष्य के गर्भ में है।